राजधर्म- राजा, राजा के कर्तव्य और उत्तरदायित्व

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी,

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

शास्त्रानुसार वेदोक्त संस्कार को प्राप्त हुए नृप को इस जगत् की रक्षा नियम के अनुसार करना चाहिए। राजा की आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए आचार्य मनु का कहना है कि राजा से हीन होने से राज्य में सर्वत्र भय एवं अस्थिरता का वातावरण व्याप्त हो जाता है। अतः सबकी रक्षा के निमित्त ब्रह्माजी ने राजा को रचा-

अराजके हि लोकेऽस्मिन्सर्वतो विद्रुते भयात्।

रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजत्प्रभुः।।

इन्द्र, पवन, यम, सूर्य और अग्नि के और वरुण के और चन्द्रमा और कुबेर के भी नित्य रहनेवाली अंशों से राजा का निर्माण किया गया है-

इन्द्रानिलयमार्काणामग्नेश्च वरुणस्य च।

चन्द्रवित्तेशयोश्चैव मात्रा निर्हृत्य शाश्वतीः।।

बालक राजा को भी मनुष्य मानकर उसका तिरस्कार नहीं करना चाहिए क्योंकि यह कोई बड़ा देवता मनुष्य रूप में स्थित है। तात्पर्य यह है कि किसी भी व्यक्ति को अपने से कम आयु वाले राजा की अवमानना नहीं करनी चाहिए-

बालोऽपि नावमन्तव्यो मनुष्य इति भूमिपः।

महती देवता ह्येषा नररूपेण तिष्ठति।।

जिसकी प्रसन्नता में लक्ष्मी, पराक्रम में विजय और क्रोध में मृत्यु निवास करती है वह राजा सबके तेज को धारण करता है। ऐसे राजा से जो व्यक्ति द्वेष करता है वह निःसन्देह नष्ट हो जाता है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

ईश्वर ने उस राजा के प्रयोजन की सिद्धि के लिए और सब प्राणियों की रक्षा करने वाले धर्मरूप अपने पुत्र के लिए सर्वप्रथम ब्रह्मतेज से युक्त दण्ड को रचा-

तस्यार्थे सर्वभूतानां गोप्तारं धर्ममात्मजम्।

ब्रह्मतेजोमयं दण्डमसृजत्पूर्वमीश्वरः।।

देश, काल, दण्ड की शक्ति और विद्यादि को यथार्थ रीति से विचार करके अन्याय करने वाले मनुष्यों के लिए राजा दण्ड का यथायोग्य प्रयोग करता है-

तं देशकालौ शक्तिं च विद्यां चावेक्ष्य तत्त्वतः।

यथार्हतः संप्रणयेन्नरेष्वन्यायवर्तिषु।।

वह दण्ड ही राजा है और वह दण्ड ही पुरुष है, वही नेता है जो सभी कार्यों को सम्पन्न करने वाला है, वही शिक्षा देने वाला और चारों आश्रमों के धर्मों की रक्षा करने वाला कहा गया है-

स राजा पुरुषो दण्डः स नेता शासिता च सः।

चतुर्णामाश्रमाणां च धर्मस्य प्रतिभूः स्मृतः।।

दण्ड ही सभी प्रजाओं का शिक्षक है, दण्ड ही रक्षक है और दण्ड ही सभी के सो जाने पर जागता रहता है तथा दण्ड को ही विद्वानों ने धर्म कहा है-

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।

दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः।।

शास्त्र के अनुसार विचारपूर्वक दिया हुआ दण्ड सभी प्रजाओं को प्रसन्न करता है और बिना विचारे दिया हुआ दण्ड तो प्रयोक्ता को सब ओर से नष्ट कर देता है-

समीक्ष्य स धृतः सम्यक् सर्वा रञ्जयति प्रजाः।

असमीक्ष्य प्रणीतस्तु विनाशयति सर्वतः।।

यदि राजा आलस्यहीन होकर अपराधियों को दण्ड न दे, तो बलवान प्राणी दुर्बलों को ऐसे समाप्त कर देंगे जैसे मछलियों को शूली पर पकाया जाता है-

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

यदि प्रणयेद्राजा दण्डं दण्ड्येष्वतन्द्रितः।

शूले मत्स्यानिवापक्ष्यन्दुर्बलान्बलवत्तराः।।

दण्ड से जीता हुआ जगत् सन्मार्ग में स्थित रहता है क्योंकि स्वभाव से शुद्ध मनुष्य दुर्लभ हैं और दण्ड के भय से ही सब संसार वस्तुओं को भोगने में समर्थ होता है-

सर्वो दण्डजितो लोको दुर्लभो हि शुचिर्नरः।

दण्डस्य हि भयात्सर्वं जगद्भोगाय कल्पते।।

जिस देश में श्यामवर्ण लाल नेत्र वाला पाप का हरने वाला दण्ड विचरता है वहाँ की प्रजा दुःखी नहीं होती है। सत्यवादी, शास्त्रोक्त कार्य करने वाले, चतुर और धर्म, अर्थ एवं काम के जानने वाले राजा को दण्ड देने वाला कहा गया है-

तस्याहुः संप्रणेतारं राजानं सत्यवादिनम्।

समीक्ष्यकारिणं प्राज्ञं धर्मकामार्थकोविदम्।।

यथोचित दण्ड का विधान करने से राजा धर्मार्थकाम के प्रयोग से बढ़ता है और इसके विपरीत विषयी, क्रोधी और छलछिद्र युक्त राजा उस दण्ड से ही नष्ट हो जाता है-

तं राजा प्रणयन्सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्धते।

कामात्मा विषमः क्षुद्रो दण्डेनैव निहन्यते।।

राजा को चाहिए कि विषयों के समीप दौड़ने वाली इन्द्रियों के जीतने में सदा यत्न करे क्योंकि जितेन्द्रिय राजा ही प्रजा को वशीभूत करने में समर्थ है-

इन्द्रियाणां जये योगं समातिष्ठेद्दिवानिशम्।

जितेन्द्रियो हि शक्नोति वशे स्थापयितुं प्रजाः।।

काम से उत्पन्न हुए विषयों में आसक्त हुआ राजा धर्म एवं अर्थ से वञ्चित हो जाता है और यदि क्रोध से उत्पन्न हुए व्यसन में फँस जाए तो अपने आप ही नष्ट हो जाता है-

कामजेषु प्रसक्तो हि व्यसनेषु महीपतिः।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

वियुज्यतेऽर्थधर्माभ्यां क्रोधजेष्वात्मनैव तु।।

जितने मनुष्यों से राजा का कार्य ठीक से चल सके उतने ही आलस्यहीन और चतुर मन्त्रियों की नियुक्ति की जानी चाहिए। मन्त्रियों के मध्य में शूरवीर कार्यकुशल अच्छे कुल में उत्पन्न हुए चरित्रवान् पुरुषों को खान-पान व अन्नादि की उत्पत्ति के स्थानों में नियुक्ति करनी चाहिए। जो भीरु हो उन्हें अन्तःपुर में नियुक्त करे। सब शास्त्रों में पण्डित इंगित आकार और चेष्टा के जानने वाले चरित्रवान् कुशल अच्छे कुल में उत्पन्न दूत को भी नियुक्त करे। स्वामीभक्त व चरित्रवान, चतुर संदेशों को न भूलने वाला, देशकाल का ज्ञाता, स्वरूपवान, निडर और युक्तिपूर्वक वचन बोलने वाले व्यक्ति को दूत के रूप में नियुक्ति करनी चाहिए। दण्ड मन्त्री के अधीन, विनय दण्ड के अधीन, खजाना और राज्य राजा के अधीन तथा सन्धि और विग्रह सदा दूत के अधीन रहते हैं।

मनुस्मृति में राजा के लिए दुर्ग के महत्त्व के विषय में बताया गया है। कहा गया है कि जैसे दुर्ग में रहने वाले मृग आदि को सिंह आदि शत्रु हिंसा नहीं कर सकते वैसे ही दुर्ग में रहने वाले राजा को भी शत्रु नहीं मार सकते-

यथा दुर्गाश्रितानेतान्नोपहिंसनित शत्रवः।

तथारयो न हिंसन्ति नृपं दुर्गसमाश्रितम्।।

एक भी धनुषधारी किले में बैठकर सौ योद्धाओं के साथ युद्ध कर सकता है और सौ योद्धा दश हजार के साथ युद्ध कर सकते हैं, अतः शास्त्रकारों ने दुर्ग बनाना का विधान कहा है। वह दुर्ग खड्गादि शस्त्र, धनधान्य, अश्वादि की सवारी, मन्त्री, पुरोहित, कारीगर, यन्त्र, भुस और जलादि से पूर्ण रहना चाहिए।

राजा को अपने देश में नियुक्त हुए सज्जन मन्त्रियों द्वारा प्रत्येक वर्ष में प्रजा से छठा भाग ग्रहण करे तथा वेद के अनुसार कर को ग्रहण करे और पिता के समान प्रजा पर प्रीति रखे-

सांवत्सरिकमाप्तैश्च राष्ट्रादाहारयेद्बलिम्।

स्याच्चाम्नायपरो लोके वर्तेत पितृवन्नृषु।।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

युद्ध में पीठ दिखाकर न भागना, प्रजा का पालन करना तथा विद्वान् ब्राह्मणों की सेवा करना राजा का परम धर्म है-

संग्रामेष्वनिवर्तित्वं प्रजानां चैव पालनम्।

शूश्रुषा ब्राह्मणानां च राज्ञां श्रेयस्करं परम्।।

राजा के लिए उचित है कि वह अमात्य आदि में कपट व्यवहार न करे अर्थात् धर्म रक्षा के लिए यथार्थ व्यवहार करे, अपनी रक्षा को भली प्रकार जाने और शत्रु की माया को दूतों द्वारा जाने-

अमाययैव वर्तेत न कथंचन मायया।

बुध्येतारिप्रयुक्तां च मायां नित्यं स्ववृतः।।

राजा ऐसा उपाय करे जिससे शत्रु इसके छिद्रों को न जान पायें और वह शत्रु के छिद्रों को जानकर उसे अपने अधीन करे। यदि दैववश छिद्र भी हो जाए तो राजा उसकी यत्न से रक्षा करे-

नास्य छिद्रं परो विद्याद्विद्याच्छिद्रं परस्य तु।

गूहेत्कूर्म इवाङ्गानि रक्षेद्विवरमात्मनः।।

साम, दाम, दण्ड और भेद-इन चार उपायों में से राजनीति के पण्डित लोग राज्य की वृद्धि के लिए सदा साम और दण्ड की ही प्रशंसा करते हैं क्योंकि शान्ति रूप उपाय में परिश्रम, धन का व्यय, सेना का नाश आदि दोषों का अभाव है और दण्ड रूप उपाय में पूर्वोक्त दोष होने पर भी कार्यसिद्धि की विशेषता है-

सामादीनामुपायानां चतुर्णामपि पण्डिताः।

सामदण्डौ प्रशंसन्ति नित्यं राष्ट्राभिवृद्धये।।

जैसे धान्य को काटने वाला तिनकों को खेत में से उखाड़ता है और धान्य की रक्षा करता है वैसे ही राजा भी राज्य में दुष्टों को मारना चाहिए और शिष्टजनों की रक्षा करनी चाहिए-

यथोद्धरति निर्दाता कक्षं धान्यं च रक्षति।

तथा रक्षेन्नृपो राष्ट्रं हन्याच्च परिपन्थिनः।।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

जो राजा शिष्ट और दुष्टों को न जानकर अज्ञान से प्रजा को पीड़ित करता है वह शीघ्र ही देश के वैर रूप अधर्म के प्रभाव से राज्य और अपने पुत्र बान्धवों सहित नष्ट हो जाता है। भोजनादि के छोड़ने से शरीर के सुख जाने पर जैसे प्राणियों के प्राण नष्ट हो जाते हैं, वैसे ही प्रजा को पीड़ा देने से राजाओं के भी प्राण नष्ट हो जाते हैं, अतः राजा को अपने शरीर के समान प्रजा की भी रक्षा करनी चाहिए-

शरीरकर्षणात्प्राणाः क्षीयन्ते प्राणिनां यथा।

तथा राज्ञामपि प्राणाः क्षीयन्ते राष्ट्रकर्षणात्।।

कार्य को देखकर ही राजा कठोर और कोमल व्यवहार करना चाहिए, सर्वदा एक सा बर्ताव न करना चाहिए क्योंकि तीक्ष्ण और कोमल व्यवहार वाला राजा ही उत्तम होता है। जब राजा प्रजा के कार्य देखने में अत्यन्त थका हुआ महसूस करे तो सहायता हेतु धर्मज्ञ, बुद्धिमान, जितेन्द्रिय एवं कुलीन मन्त्री को मुख्य सहायक मन्त्री नियुक्त करना चाहिए। प्रजा की रक्षा ही राजा का परम धर्म है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi